Date - 18/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह

मनोविज्ञान विभाग

महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

असामान्य व्यवहार के जैविक कारण

(Biological Causes of Abnormal Behavior)

जैविक कारक असामान्यता या मानसिक विकृति की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जैविक कारक से तात्पर्य उन सभी कारकों से होता है जो जन्म या उससे पहले से ही व्यक्ति में प्रत्यक्ष या । होते हैं और बाद में असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति में किसी-न-किसी तरह से मदद कर परोक्ष रूप स मौजूद अन्तर्गत आनुवांशिकता , जैव रासायनिक उपद्रव, शरीरिक संरचना , अन्त:स्त्रावी ग्रंथियों , मस्तिष्कीय आघात आदि जैसे कारकों की रखा जाता है। जैविक कारकों का स्वरूप ही कुछ ऐसा होता है कि वह व्यक्तित्व के सभी पहलओं पर अपना प्रभाव डालता है। यही कारण है कि सामान्य तथा असामान्य व्यवहार की उत्पति में टमका विशेष महत्व होता है। इस सम्बंध में हुऐ अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति तथा विकास में निम्नांकित पाँच कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

1 आनुवंशिक दोष **(Genetic Defects)**

2 शरीरगरुनात्मक कारक **(Constitutional Factors)**

3 जैव-रसायन कारक **(Biochemical Factors)**

4 मस्तिष्क्रीय दुष्क्रिया **(Brain Dysfunction)**

5 शारीरिक तनाव कारक **(Bodily Stress Factors)**

इन सबों का एक-एक कर वर्णन इस प्रकार है।

1 आनुवांशिक दोष **(Genetic Defects**)

सामान्यतया आनुवांशिकता से तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से होता है जिसके द्वारा पूर्वजों के शीलगुण बच्चों तक पहुँचते हैं। सच्चाई यह है कि जब महिला का अण्डाणु कोशिका पुरुष के शुक्राणु कोशिका से मिलकर गर्भित हो जाता है तो उसमें बनने वाला भ्रूण को एक आनुवांशिक कोड प्राप्त होता है। यही प्रक्रिया आनुवांशिकता कहलाती है। यही आनुवांशिक कोड पूरे जीवन काल में व्यक्ति के व्यवहार को नियमित एवं विकसित करता है। आनुवांशिकता का सीधा असर व्यक्ति के व्यवहार पर पड़ता है। फलतः इसमें किसी तरह के दोष से सीधे असामान्य व्यवहार या मानसिक विकृति उत्पन्न हो जाती है। इसके तहत आनेवाले दोषों जिससे असामान्यता उत्पन्न होती है, को निम्न दो भागों में बाँटा गया है-

(a) गुणसूत्रीय असामान्यता (Chromosomal anomalies)
(b) दोषपूर्ण जीन्स (Faulty genes)

इन दोनों का वर्णन इस प्रकार है

(**a) गुणसूत्रीय असामान्यता (Chromosomal Anomalies)**-गुणसूत्रीय असामान्यता से तात्पर्य गुणसूत्र को सामान्य संख्या (Number) तथा उसकी संरचना में विचलन से होता है। इस तरह के विचलन से तरह-तरह के असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति होती है। मानव की कोशिका केन्द्र में में जंजीर के समान एक संरचना होती है जिसमें जीन्स होते हैं, को गुणसूत्र कहा जाता है। अब महिला का अंडाणु पुरुष के शुक्राणु से मिलकर गर्भित होता है, तो सामान्यतः उसमें गुणसूत्र का 23 जोड़ा होता है- प्रत्येक जोड़ा का एक गुणसूत्र माँ से तथा एक गुणसूत्र पिता से प्राप्त होता है। इसमें से 22 जोड़े गुणसूत्र को ऑटोजोन्स (Autosome) कहा जाता है जो व्यक्ति के सामान्य शारीरिक विशेषताओं को निर्धारित करते हैं तथा 23वाँ जोड़ा यौन गुणसूत्र का होता है जो बच्चे के यौन का निर्धारण करता है। गुणसूत्रीय असामान्यताओं में निम्नांकित पाँच तरह की असामान्यताएँ अधिक प्रमुख है-

(i) ट्रीजोमी 13 (Trisomy 13)-गुणसूत्रीय असामान्यता के इस प्रकार में 13वें जोड़े गुणसूत्र में एक अतिरिक्त गुणसूत्र पाया जाता है जिससे व्यक्ति में मस्तिष्कीय असामान्यता (Brain abnormalities) उत्पन्न होती है और व्यक्ति का व्यवहार असामान्य हो जाता है।
(ii) ट्रीजोमी 18 (Trisomy 18)-यहाँ 18 वें जोड़े गुणसूत्र में इससे हृदय सम्बंधी गड़बड़ियाँ उत्पन्न होती है। अतिरिक्त गुणसूत्र की स्थिति होती है

(iii) ट्रीजोमी 21 (Trisomy 21)-गुणसूत्रीय असामान्यता के इस प्रकार में 21 वे जोड़ गुणसूत्र में एक अतिरिक्त गुणसूत्र पाया जाता है जिससे बच्चा डाउन संलक्षण (Down syndrome) नामक मानसिक मंदल (Mental retardation) का शिकार बन जाता है।

(iv) ट्रीजोमी 23 (Trisomy 23)-यह पुरुषों के यौन गुणसूत्रीय असामान्यता से सम्बद्ध है। यहाँ XXY जैसी स्थिति होती है परिणामतः इनमें पुरुषार्थ की कमी होती है। इसे क्लाइनफेल्टर संलक्षण (Klinefelter syndrome) भी कहा जाता है।

(v) मनोनोजोमी 23 (Monosomy 23)-यह महिलाओं के यौन गुणसूत्रीय असामान्यता से सम्बद्ध है। यहाँ XO की स्थिति पायी जाती है। कभी कभी यहाँ XXX की भी स्थिति देखने को मिलती है। इसे टर्नर मंलक्षण (Turuner's syndrome) भी कहा जाता है।

(**b) दोषपूर्ण जीन्स (Faulty Genes)**-जीन्स जो गुणसूत्र के विभिन्न स्थानों पर अवस्थित होते हैं, में कुछ जीन्स प्रबल तथा कुछ अप्रबल प्रकृति के होते हैं। प्रबल जीन्स (dominant genes) के निर्देश को अप्रबल (Recessive) जीन्स के विरोध के बावजूद भी कार्यान्वित किया जाता है। लेकिन जब कई अप्रबल जीन्स आपस में अन्तः क्रिया करते हैं ओर निर्देश जारी करते हैं तो यह निर्देश प्रबल के विरोध के बावजूद भी लागू किया जाता है। इसका

परिणाम यह होता है कि व्यक्ति के मस्तिष्कीय रसायन (Brain chemistry) में गड़बड़ी उत्पन्न हो जाती है और उसका व्यवहार आसामान्य हो जाता हो इस तथ्य का समर्थन भ्रात्रीय जुड़वाँ (Dizygotic twins) तथा एकांडी जुड़वाँ बच्चों (Monozygotic twins) पर किए गये अध्ययनों से हुआ है।

2 शरीरगठनात्मक कारक **(Constitutional Factors**)

इस सम्बंध में हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि कुछ विशेष एवं दोषपूर्ण शरीरगठनात्मक कारकों को महत्वपूर्ण भूमिका असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति में होती है। कुछ प्रमुख शरीर गठनात्मक कारक जिनसे असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति होती है, निम्नांकित है-

(**a)** शरीरगठन या डील-डौल **(Physique)**

(b) दैहिक विकलांगता **(Physical handicaps)**

(c) प्राथमिक प्रतिक्रिया प्रवृति **(Primary reaction Tendencies)**

इन सबों का एक-एक कर वर्णन इस प्रकार है।

(a) शरीरगठन या डील-डॉल **(Physique**)-कुछ प्रारम्भिक अध्ययनों में शारीरिक गठन का सम्बंध मानसिक विकृति एवं व्यक्तित्व विकास से दिखाने का प्रयास किया गया है। इसमें सबसे पहला प्रयास शेल्डेन (Sheldon, 1954) द्वारा किया गया जिसमें तीन तरह के शरीरगठन की चर्चा की गयी थी एण्डोमॉर्फी (Endomorphy), मेसोमार्फी (Mesomorphy) एवं एक्टोमॉर्फी (Ectomorphy)। शेल्डन का कहना था कि तनावपूर्ण परिस्थिति में इन तीन तरह के शारीरिक संरचना वाले व्यक्ति अलग-अलग तरह के असामान्य व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। जैसे एण्डोमार्फी में उत्साह-विषाद मनोविकृति (Manic depressive psychosis), मेसोमॉफी में समाज-विरोधी व्यवहार (anti social behavior) तथा एक्टोमॉर्की में मनोविदालिता (Schizophrenia) तथा चिंता मनस्नायुविकृति (Anxiety neurosis) होने की सम्भावना अधिक होती है। हालांकि बाद में इनके इस विचार की आलोचना की गयी, लेकिन हाल में शारीरिक अनाकर्षकता (Physical unattractiveness), को मानसिक विकृति की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण योग्यदान देते पाया गया है। स्पष्टतः तब भिन्न-भिन्न तरह के शरीरगठनात्मक कारकों का योग्यदान मानसिक विकृति की उत्पत्ति अहम भूमिका निभाता है।

(**b)** शारीरिक विकलांगता **(Physical handicaps**)-विकलांगता चाहे जन्मजात हो या पर्यावरणी कारकों के कारण पैदा हुआ हो, दोनों ही परिस्थिति में इससे मानसिक विकृति या असामान्य व्यवहार उत्पन्न होते पाया गया है। जैसे जिन बच्चों का जन्म के समय वजन 5.5. पॉण्ड से कम होता है, उनमें आगे चलकर मानसिक रोग (Mental disorders) जैसे मानसिक दुर्बलता (Mental deficiency), सांवेगिक समायोजन की समस्या आदि अधिक होती है। उसी तरह गर्भवती माताओं में अत्यधिक सविंगिक उपद्रव से (Emotional disturbance) से पूर्वपरिपक्व (Premature) बच्चे का जन्म होता है जिनमें आगे चलकर विभिन्न मानसिक रोगों के होने की सम्भावना अधिक रहती है। उसी तरह पर्यावरणी कारकों से उत्पन्न विकलांगता के कारण भी मानसिक विकृतियों एवं समायोजन-सम्बद्ध समस्याएँ उत्पन्न होती है।

(c) प्राथमिक या मूल प्रतिक्रिया प्रवृत्ति **(Primary reaction Tendencies**)-मूल अनुक्रिया या प्रतिक्रिया प्रवृति से तात्पर्य वैसे जन्मजात प्रवृति (Tendency) से होता है जिसके कारण व्यक्ति बाह्य वातावरण के प्रति कोई प्रतिक्रिया करता है। ऐसी प्रवृति को शरीरगठनात्मक (Constitutional) माना जाता है न कि वंशानुगत (Hereditary) क्योंकि ऐसी प्रवृतियाँ पूर्वप्रसूतिकालीन वातावरण (Prenatal environment) द्वारा अधिक

प्रभावित होता है। इस सम्बंध में हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि 7 से लेकर 10% बच्चों में मूल अनुक्रिया प्रवृति दोषपूर्ण होती है जिससे आगे चलकर उनमें असामान्य व्यवहार तेजी से पनपता है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि शरीरगठनात्मक मॉडल **(Constitutional Model)** असामान्य व्यवहार की व्याख्या वैसे कारकों के द्वारा करता है जो शरीर के गठन या संरचना से सम्बद्ध होते हैं। हालांकि आधुनिक अध्ययनों से प्राप्त तथ्यों को मद्देनजर इनका महत्व अपने आप ही कम होती जा रही है।

3 जैव-रसायनिक कारण (Bio-Chemical Causes)

असामान्य व्यवहार की व्याख्या करने में जैव रसायनिक मॉडल का महत्वपूर्ण स्थान है जिसका प्रतिपादन 1950 के आसपास किया गया। यह मॉडल असामान्यता की व्याख्या कुछ रसायनिक पदार्थों जैसे पौष्टिक आहार की कमी, विटामिन्स एवं खनिज पदार्थों की कमी, हारमोन्स की कमी आदि के रूप में करता है। इनका वर्णन इस प्रकार है-

(a) रसायानिक पदार्थ **(Chemical Elements**)-हमारे शरीर में एक महत्वपूर्ण रसायनिक पदार्थ ऐम्टीलकोलाईन (Acetelcholine) है जो तंत्रिका तंत्र (Nurvous system) की क्रियाओं को होने में मदद करता है तथा जिसे फिर से होने से रोकता है। अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि मस्तिष्कीय सुषुम्ना तरल पदार्थ (Cerebrospinal Fluid) में ऐस्टीलकोलाईन की सामान्य मात्रा में नहीं होने से आक्षेप (Convulsion) उत्पन्न होता है। आजकल असामान्य व्यवहार की उत्पति में केटकोलामाईन (Catecholamine) समूह के रसायनिक पदार्थ जिसमें नारइपाईनफ्राईन या नारएड्रानालीन (Norepinephrine or Noradrenalin) एवं डोपामाइन (Dopamine) आते हैं तथा इन्डोलामाइन समूह (Indoleamine) के रसायनिक पदार्थ जिसके अन्तर्गत सिरोटोनिन (Serotonin) आता है, को अधिक महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है। असामान्यता की व्याख्या में इन रसायनिक पदार्थों के योगदान को दो तरह की पूर्वकल्पनाओं के माध्यम से किया जाता है। ये प्राक्कल्पनाएँ हैं- (i) केटकोलामाईन प्राक्कल्पना (Catecholamine hypothesis) तथा (ii) इन्डोलामाईन प्राक्कल्पन। (Indoleamine hypothesis) । केटकोलामाईन प्राक्कल्पना के अनुसार केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र में (Central nrvous system) में केटकोलामाईन की कमी से जीव शांत, तथा मंदित एवं इसकी अधिकता से जीव उत्तेजित हो जाता है। अर्थात इसकी कमी से विषाद जैसे मानसिक रोग तथा अधिकता से सांवेगिक उपद्रव जैसे मानसिक रोग की उत्पत्ति होती है। उसी तरह इन्डोलमाईन प्राक्कल्पना के अनुसार सेरोटोनिन की मात्रा में कमी से विषाद (Depression) जैसे मानसिक अवस्था तथा अधिकता से सांवेगिक उत्तेजना (Emotional Excitement) जैसी मानसिक अवस्था उत्पन्न होती है।

(**b)** पौष्टिक आहार की कमी **(Lack of Nutrition**)-नवीनतम अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि मस्तिष्क (Brain), सुषुम्ना (Spinal card) तथा परिधीय तंत्रिका (Pheripheral nerves) के उत्तक (Tissues) व्यक्ति द्वारा लिए गये पौष्टिक आहार पर निर्भर करते हैं तथा अपनी कार्यदक्षता को बनाए रखते हैं। पौष्टिक आहार की कमी से बच्चे का शारीरिक तथा मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। एक अध्ययन के अनुसार अपौष्टिक आहार की मात्रा तथा चौद्धिक क्षमता में धनात्मक सम्बंड (Positive correlation) पाया जाता है। शर्मा (Sharma, 1973) के अनुसार पौष्टि आहार में कमी से मानसिक दुर्बलता उत्पन्न होती है।

कुछ अध्ययनों में खनिज पदार्थ तथा विटामिन की कमी से भी असामान्य व्यवहार को बुत्पन्न होते पाया गया है। जैसे विनिक (Winick, 1970) के अनुसार गर्भवती माताओं के भोजन में मैगजीन की कमी से बच्चों से शारीरिक विकृति (Physical deformity) तथा भिन्न-भिन्न तरह के मनोवैज्ञानिक उपद्रव (Psychological distrubance) उत्पन्न होते हैं। विषादी उसी तरह विटामिन जैसे थियामाईन (Thiamine) B, आदि की कमी से अनेक तरह के शारीरिक एवं मानसिक लक्षण उत्पन्न होते देखा गया है।

(a) हारमोन्स एवं असामान्य व्यवहार **(Hormones and Abnormal Behaviour)-** अन्त: स्रावी ग्रन्थियों से निकलने वाले स्राव को हारमोन्स कहते हैं। ये हारमोन्स रक्त में सीधे मिलकर व्यक्तित्व विकास एवं मानव व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अनेक अध्ययनों जैसे संकार एवं उनके सहयोगियों (Sachar et al. 1973) के अनुसार कार्टीसोल (Cartisole) की अधिकता मानसिक रोगियों में अधिक होती है। हमैवर्ग (Hamburg, 1968) के अनुसार प्रोजेस्ट्रोन के सामान्य स्तर से विचलन में महिलाओं में खुदकुशी (Suide), आक्रामकता (aggressiveness) आदि काफी वढ़ जाता है। उसी तरह प्रेजोस्ट्रोन की कमी होने पर जोर-जोर से चिल्लाने, मानसिक विषाद जैसे असामान्य लक्षण भी महिलाओं द्वारा दिखलाए जाते है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि जैव रसायनिक मॉडल असामान्यता की व्याख्या अनेक तरह के जैविक एवं रसायनिक कारकों के रूप में करता है

4 मस्तिष्कीय दुष्क्रिया (Brain Dysfunction)-

यह मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या मस्तिष्क में दैहिक क्षति (Psysical damage) जो किसी भी कारण जैसे-मस्तिष्क में चोट लगना (Brain injury), संक्रमण (infection), मादकता (intoxication), बुढ़ापा, मस्तिष्कीय ट्यूमर (Brain tumor) से उत्पन्न होता है, के आधार पर करता है। इन सभी कारकों का वर्णन इस प्रकार है।

(**a) मस्तिष्कीय चोट (Brain Injury)**-मस्तिष्कीय चोट से असामान्य व्यवहार (Abnormal behaviour) तथा व्यक्तित्व विघटन (Persorality disorganization) उत्पन्न होते देखा गया है। इस तरह के चोट से मस्तिष्क में स्नायुविक परिवर्तन (Neurological changes) होते हैं जिसकी परिणति असामान्य व्यवहार तथा व्यक्तित्व विघटन के रूप में होता है। मस्तिष्कीय चोट से व्यक्ति किस तरह का मनोवैज्ञानिक लक्षण दिखलाएगा यह चोट की मात्रा तथा मस्तिष्क के किस भाग में चोट लगा है, पर निर्भर करता है। फिर भी इसके सामान्य लक्षणों में भ्रम (illusion). दोषपूर्ण स्मृति (Defective memory), दृष्टि एवं क्षवण प्रत्यक्षण में गड़बड़ी, विकृत चिंतन (Disordered thinking) आदि का नाम आता है।

(**b) संक्रमण (Infection**)-इस सम्बंध में हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि संक्रमण रोग के सूक्ष्म कीटाणु का असर तंत्रिका तंत्र पर सीधा पड़ता है जिससे भिन्न भिन्न तरह के असामान्य लक्षण (abnormal symptoms) उत्पन्न होते हैं। ऐसा ही एक प्रमुख संक्रमण रोग है-मस्तिष्कीय उपदंश (Brain Syphilis) । इसमें अनेक तरह के शारीरिक तथा मानसिक लक्षण (Physical and Psychological symptoms) देखने को मिलते हैं। दैहिक लक्षणों में हकलाना, तुतलाना, अस्पष्ट लिखावट, हाथ पैर की गति में समन्वय का अभाव आदि प्रमुख है तथा मानसिक लक्षणों में स्मृति तथा निर्णय क्षमता में हास, विचार एवं व्यवहार में विरोधाभास का प्रत्यक्षण करने में अक्षमता, संवेगिक अस्थिरता आदि मुख्य रूप से देखने को मिलता है। इन सबके अलावे ऐसे व्यक्ति सामाजिक मानकों का अनादर करते हैं तथा खुले रूप में समाजविरोधी व्यवहार (Anti-social behaviour) भी कर डालते हैं।

(**c) मादकता (Intoxication**) मादकता का स्पष्ट असर व्यक्ति के मानसिक कार्यों पर पड़ता है। शराब का वैसे तो सम्पूर्ण शरीर पर असर पड़ता है लेकिन केन्द्रिय तंत्रिका तंत्र (Central nurvous system) के उत्तकों पर इसका प्रभाव व्यापक रूप से पड़ता है। इसके प्रभावों में मुख्य रूप से बोलचाल एवं दृष्टि में विकृति, स्वाभाविक समन्वय (Natural coordination) में कमी, उच्च रक्त चाप, लकवा आदि का नाम आता है। इसके अलावा औषधि व्यसन (Drug dependency) द्वारा भी असामान्य व्यवहार उत्पन्न होता है। इसके अन्तर्गत शक्तिशाली निद्राकारी (sedative), अफीम (Opium), कोकेन (Cocaine), मारिजुआना (Marijuarta), विभ्रान्ति उत्पादक (hallucinogen) आदि प्रमुख है जिससे असामान्यता उत्पन्न होता है। इस मादक औषधियों पर निर्भर रहने वाले व्यक्तियों को औषधि व्यसनी (Drug addicts) कहा जाता है।

(**d) ह्रासी परिवर्तन (Degenerative changes**)-मस्तिष्कीय क्षति का एक कारण बुढ़ापा भी होता है। बुढ़ापा में शारीरिक तथा मानसिक दोनों ही शक्तियों में तेजी से हास होता है जिससे अनेक तरह की समस्याएँ उत्पन्न होतीं हैं। इस अवस्था में सहन क्षमता, शारीरिक प्रतिरोध शक्ति, दृष्टि प्रत्यक्षण (Visual perception) तथा श्रवण प्रत्यक्षण (Aduitory perception) आदि से सम्बंधित अनेक तरह की विकृतियाँ (Disortions) उत्पन्न होती है। इसके अलावा समायोजन सम्बंधी समस्याएँ भी व्यक्ति के व्यवहार को असामान्य बना देती है।

उपरोक्त कारकों के अलावा भी कई ऐसे कारण हैं जिनसे मस्तिष्कीय क्षति उत्पन्न होती है। जैसे स्ट्रोक (Stroke), मस्तिष्कीय ट्यूमर (Brain tumor) आदि प्रमुख है। इससे भी व्यक्ति में असामान्यता या असामान्य व्यवहार या मानसिक विकृति उत्पन्न होती है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि मष्तिष्कीय दुष्क्रिया मॉडल असामान्य व्यवहार के कारणों की व्याख्या विभिन्न कारणों से कुछ आंगिक क्षति के आधार पर करता है।

5 शारीरिक तनाव मॉडल (Bodily Stress Model)-

यह मॉडल असामान्य व्यवहार की व्याख्या तनाव (stress) जो एक शारीरिक अवस्था (bodily condition) होती है, के रूप में की गयी है। तनाव जैसी शारीरिक अवस्था की उत्पत्ति कई कारणों से हो सकती है जिन्हें स्ट्रेसर (stressor) कहा जाता है। स्ट्रेसर के दो प्रकार होते हैं-भौतिक स्ट्रेसर (Physical stressor) तथा मनोसामाजिक स्ट्रेसर (Psychosocial stressor)। अत्यधिक तीव्र आवाज, तीव्र रोशनी, अत्यधिक कम या ऊँचा तापमान, अधिक भौतिक स्ट्रेसर के उदाहरण हैं। विभिन्न क्षेत्रों में असफलता, अनिर्णयकता, मानसिक संघर्ष, निराशा या कुण्ठा, असुरक्षा की भावना, पाप या दोष की भावना आदि प्रमुख मनोवैज्ञानिक स्ट्रेसर के उदाहरण हैं।

असामान्य व्यवहार की व्याख्या करने में तनाव सिद्धान्त पर सबसे अधिक बल हंस सेली (Hans Selye) के शोधों द्वारा किया गया। इन्होंने 1952 में सामान्य अनुकूलन संलक्षण (General adaptations syndrome) का संप्रत्यक्ष (Concept) विकसित किया। इसके तीन चरण हैं-

(a) प्रारंभिक चेतावनी प्रतिक्रिया की अवस्था (Phase of initial alarm reaction)

(b) प्रतिरोध की अवस्था (Resistance phase)

(c) थकान की अवस्था (Exustion phase)

पहली अवस्था में व्यक्ति को चेतावनी मिल जाता है कि वह कुछ ऐसे भौतिक या मनोसामाजिक कारकों से घिर गया है जो उसके लिए चिन्ता का विषय है। दूसरी अवस्था में व्यक्ति के शरीर में काफी महत्वपूर्ण जैव रसायनिक परिवर्तन होते हैं जो एक तरह से रक्षात्मक प्रतिक्रिया होता है और अन्त में तीसरी अवस्था में व्यक्ति में शारीरिक एवं मानसिक उपद्रव प्रारम्भ हो जाते हैं। इस अवस्था में आने पर असामान्यता के स्पष्ट लक्षणों को देखा जा सकता है।

निष्कर्षतः तब कहा जा सकता है कि तनाव मॉडल के अनुसार व्यक्ति में असामान्य व्यवहार का मूल कारण कुछ भौतिक एवं मनोसामाजिक **(Physical & psychosocial)** कारक होते हैं जो व्यक्ति में तनाव पैदा करता है। प्रारम्भ मैं व्यक्ति में तो इन तनाव से जैव रासायनिक परिवर्तन से निपटने का प्रयास करता है और यदि वह इस प्रयास में असफल रहता है तो व्यक्ति में कई शारीरिक लक्षणों के साथ ही साथ असामान्यता का भी आगमन हो जाता है।